

Библиотека Буддика

Том XIII

**Москва
«Книга по Требованию»**

УДК 291
ББК 86.3
Б59

Б59 Библиотека Буддика: Том XIII / – М.: Книга по Требованию, 2021. – 304 с.

ISBN 978-5-517-91173-5

Bibliotheca Buddhica - серия публикаций оригинальных и переводных буддийских текстов, созданная С.Ф.Ольденбургом и другими русскими учеными в Санкт-Петербурге при Российской академии наук и остающаяся до сих пор одним из самых авторитетных изданий среди буддологов мира. Репринтное издание по технологии print-on-demand с оригинала 1911 года.

ISBN 978-5-517-91173-5

© Издание на русском языке, оформление
«YOYO Media», 2021

© Издание на русском языке, оцифровка,
«Книга по Требованию», 2021

Эта книга является репринтом оригинала, который мы создали специально для Вас, используя запатентованные технологии производства репринтных книг и печати по требованию.

Сначала мы отсканировали каждую страницу оригинала этой редкой книги на профессиональном оборудовании. Затем с помощью специально разработанных программ мы произвели очистку изображения от пятен, клякс, перегибов и попытались отбелить и выровнять каждую страницу книги. К сожалению, некоторые страницы нельзя вернуть в изначальное состояние, и если их было трудно читать в оригинале, то даже при цифровой реставрации их невозможно улучшить.

Разумеется, автоматизированная программная обработка репринтных книг – не самое лучшее решение для восстановления текста в его первозданном виде, однако, наша цель – вернуть читателю точную копию книги, которой может быть несколько веков.

Поэтому мы предупреждаем о возможных погрешностях восстановленного репринтного издания. В издании могут отсутствовать одна или несколько страниц текста, могут встретиться невыводимые пятна и кляксы, надписи на полях или подчеркивания в тексте, нечитаемые фрагменты текста или загибы страниц. Покупать или не покупать подобные издания – решать Вам, мы же делаем все возможное, чтобы редкие и ценные книги, еще недавно утраченные и несправедливо забытые, вновь стали доступными для всех читателей.



Серия Книжный Ренессанс

www.samizday.ru/reprint

Предисловіе къ I изданію.

Текстъ Махāvјутпатти изданъ по слѣдующимъ рукописямъ:

1) Р. Рукопись на четырехъ языкахъ (т. е. санскритскомъ, тибетскомъ, китайскомъ и монгольскомъ) на толстой китайской бумагѣ, изъ библіотеки Имп. Санктпетербургскаго Университета (№ 25.147); 319 листовъ; 13 вершковъ въ длину и 4 вершка въ ширину. Санскритскій текстъ писанъ вдвойнѣ, двумя азбуками: на верхней строкѣ *ланчю*; на нижней строкѣ тибетскою азбукою. Такимъ образомъ, санскритскаго текста на страницѣ по четыре строки: двѣ а) верхнихъ и двѣ б) нижнихъ. Большинство поправокъ и приписокъ встрѣчается на нижнихъ строкахъ, обозначенныхъ: б). Поправки, попадающіяся надъ строками, обозначены въ изданіи словами: «на верху». Подъ санскритскимъ текстомъ — слѣдуетъ тибетскій, ниже китайскій и затѣмъ монгольскій.

Эта рукопись представляетъ самый исправный санскритскій текстъ.

На двухъ послѣднихъ листахъ находится слѣдующая приписка:

लद्धमीधरः¹⁾ काञ्चनपर्वताभस्त्रिलोकनाथस्त्रिमलप्रदोऽणः बुद्धो विबुद्धो ऽम्बुजपत्रमे-
त्रस्तुन्मङ्गलं²⁾ भवतु शान्तिकरं तवाद्य । तेनोपदिष्टः प्रवर्त्स्वकम्प्यः ख्यातस्त्रिलोकि³⁾
नरदेवपूज्यः

1) Отнесено къ тексту, см. ниже, стр. 117, и во второй разъ приписано на л. 318. — 2) Читай: °पत्र नेत्रस्तु°? — 3) Читай: °लोकि°?

धर्मात्तमः 1) शाक्तिकरः प्रज्ञानां 2) तन्मङ्गलं भवतु शाक्तिकरं तवाद्य ॥

सद्धर्मयुक्तः श्रुतमङ्गलाद्यः 3) संघो नृदेवासुरदन्तिणीयः । यः 4) श्रीनिवासः प्रवारो गणानां तन्मङ्गलं भवतु शाक्तिकरं तवाद्य 5) ॥

नमो बुद्धाय । नमः सर्वमङ्गलतिथिमुद्धर्तनत्राज्ञाय 6) तथागतायार्कते सम्यक्सं-
बुद्धाय ॥ तद्यथा । नत्तत्रे नत्तत्रे सर्वमङ्गलतिथिमुद्धर्तनत्राणि सर्वार्थसाधुकरिणी 7)
स्वाहा ॥

यन्दिशि गन्तुगामतां 8) दिशिभवलोच्य इयन्धारिणी पठित्वा गम्यते मङ्गसिद्धि 9)
भवति ॥

सर्वमङ्गलधारणी समाप्तः 10)

ये धर्मा क्तुप्रभवा क्तुत्तेषां तथागतो ह्यवदत् ।

तेषाञ्च यो निरोध एववादी मङ्गाश्रमणः ॥

राज्ञा दानपतिश्चैव ये चन्यो 11) मि सत्तरासय ।

प्रप्रवृत्ति 12) सदा सुखमापुरोगसम्पदः ।

मङ्गाव्युत्पत्तिस्माप्तेति ॥

Въ концѣ выпуска приложено факсимиле перваго листа этой рукописи *. Объ ея происхожденіи см. свѣдѣнія у Васильева въ У. Запискахъ И. Ак. Наукъ, томъ III, стр. 30.

2) D. Рукопись Азіатскаго Музея. — На китайской бумагѣ; 2 тетради; въ 1) 1—122 л., во 2) 123—257 л. (14 вершковъ въ длину, $3\frac{3}{4}$ въ ширину). Текстъ, какъ санскритскій (по двѣ строки на страницѣ), такъ и тибетскій переводъ (подъ скр. оригиналомъ), писанъ одною азбукою — тибетскою.

На первой страницѣ: *नमो रत्नत्रयाय ॥ सद्धर्मोदितः भषोपदेशः व्यवस्थ-
प्यते तत्र बुद्धस्य भगवतः नाममाङ्गात्म्यमतिकृत्य (sic) । तथागतस्य पर्यायनामानि ।*

На 225 л. об.: *मङ्गाव्युत्पत्तिः समाप्तिः । इति । मङ्गलं । भवतु ॥*

1) Читай: *धर्मोत्तमः* — 2) На строкѣ b) *प्रज्ञानानां*, a) *तवाद्य* — 3) a) *श्रुति* —

4) Тибетскою азб.: *རྒྱུ་* — 5) P. *तावाद्य* — 6) P. *०तं०*. Все въ скобкахъ. —

7) Читай: *०रूपिणी* — 8) Читай: *०कामता दिशम०?* — 9) Читай: *०द्धिर्भवति* —

10) Читай: *समाप्ता* — 11) Читай: *चान्ये ऽपि । ०राशयः (?)* — 12) Читай: *प्राप्त०*.

* Факсимиле было приложено лишь къ 1-му изданію и не воспроизведено въ настоящемъ изданіи. Н. М.

Два листа 256—257 съ тибетскимъ послѣсловіемъ. См. O. Boehtlingk, Ueber einige Sanskrit-Werke in der Bibliothek des Asiatischen Departements, въ Bulletin Historico-Philologique, т. II, стр. 345.

3) М. Рукопись тамъ-же (Indica № 125 b), на европейской бумагѣ (11³/₄ вершка въ длину, 3³/₄ въ ширину). Тибетская азбука. По три строки санскритскаго текста на страницѣ; тибетскій переводъ подъ каждою строкою. По всей вѣроятности списокъ съ Т.

На первой страницѣ: नमो भगवते (sic) शाक्यमुनये तथागतायार्हते (sic) सम्यक्संबुद्धाय ।

На послѣдней: व्युत्पत्ति समाप्तेति । शुभमस्तु सर्वज्ञगतम्

За тѣмъ одна страница санскритскихъ словъ съ тибетскимъ и монгольскимъ переводомъ. См. A. Schiefner, въ Bulletin Historico-Philologique, т. IV, стр. 286, т. V, стр. 147.

4) Т. Текстъ, напечатанный въ 123 т. Танжура; экземпляръ (№ 25.252) библіотеки Имп. Санктпетербургскаго Университета; азбука тибетская; печать неясная.

Начало: व्युत्पत्ति समा---, далѣе нѣсколько буквъ вытерто, затѣмъ: नमो भगवते शाक्यमुनये तथागतायार्हते (sic) सम्यक्संबुद्धाय ।

Заканчивается: व्युत्पत्ति समाप्तेति । शुभमस्तु सर्वज्ञगतम् ।

[5] L. 1) Рукопись Азіатскаго Музея. На 1-мъ листѣ стоитъ 1066 и приклеенъ билетикъ: «Санскрито-тибетскій словарь буддійскихъ терминовъ, расположенный по предметамъ. (Санскритскія слова въ семъ экземплярѣ писаны тибетскими буквами)». Кромѣ того на 1-мъ листѣ: व्युत्पत्ति समा(?) नाम विकृति स्म. — Рукопись на толстой желтой бумагѣ (11 вершковъ въ длину, 2 въ ширину) по четыре строки на страницѣ. И санскритскій и тибетскій тексты писаны тибетскою азбукою. На оборотѣ 1-го листа: नमो भगवते शाक्यमुनये

1) Описаніе рукописей L. и S. приведено по замѣткамъ И. П. Минаева въ его экземплярѣ Mahāvūtratti. Н. М.

तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय. Листы (175) обозначены китайскими цифрами. На послѣдней страницѣ: व्युत्पत्ति समाप्ति и далѣе शुभमस्तु सर्वज्ञगतमः (?) अनेन पुण्येन नु (?) सर्व दर्षिताः (?) मबास्य (?) निर्जित्य च दोषद्विषः अरतु (?) ज्ञा (?) मृत्युमहोर्मिसंकुलात् समुद्धरणं भवसगराजगतम्। (sic). Затѣмъ ये धर्मा и т. д. и въ концѣ: मङ्गलं श्री स्वलज्जम्बुदीपालङ्करमस्तु शुभं।]

6) U. Рукопись библиотеки Императорскаго Санктпетербургскаго Университета № 25.148. На европейской бумагѣ — in fol.; стр. 1—356. Въ концѣ оглавление по тибетски. Текстъ (въ 2 столбца) на двухъ языкахъ: тибетскомъ и санскритскомъ; азбука тибетская.

На первомъ листѣ: नमो रत्नत्रयाय । सद्धर्मोदितः भषोपदेशः व्यवस्थप्यते । तत्र बुद्धस्य भगवतः नाममाहात्म्यमतिकृत्य (sic) । तथागतस्य पर्यायानामानि । (!).

На 353: महाव्युत्पत्तिः समाप्ति (sic) । इति मङ्गलं भवातु (!) ।

За симъ два листа тибетскаго послѣсловія. — По всей вѣроятности списокъ съ D.

[7] Къ тому же типу рукописей слѣдуетъ относить S¹) — рукопись Азіатскаго Музея. Писана на 305 листахъ толстой бѣлой бумаги (11 вершковъ въ длину и 2¹/₂ вершка въ ширину) двумя азбуками: ланчой и тибетской. Санскритскій текстъ повторяется дважды ланчой (s) и тибетскими письменами. Начинается: नमो रत्नत्रयाय सद्धर्मोदितः (sic) भषोपदेशः (sic) व्यवस्थप्यते । तत्र बुद्धस्य भगवतः (sic) नाममाहात्म्यमधिकृत्य तथागतस्य पर्यायानामानि: Оканчивается на 303-мъ листѣ: महाव्युत्पत्तिः समाप्ति । इति मङ्गलं भवातु. Затѣмъ 2 листа тибетскаго послѣсловія. — Рукопись хранится между 2 деревянныхъ досокъ. На 1-й стоитъ 1066 и заглавіе на наклеенной карточкѣ: «Санскрито-Тибетскій словарь буддійскихъ терминовъ, расположенный по предметамъ. (Санскритскія слова писаны буквами ланча)».]

Въ трехъ рукописяхъ тѣ-же описки и сообщаются санскритскія заглавія нѣкоторыхъ отдѣловъ.

1) См. примѣчаніе на стр. III.

Заглавія эти слѣдующія:

- | | |
|---|---|
| 1. 1. तथागतस्य पर्यायनामानि ॥ | 1. 25. बोधिसत्त्वधारण्यः ॥* |
| 1. 2. नानातथागतनामानि ॥ | 1. 26. बोधिसत्त्वबलानि ॥ |
| 1. 3. बुद्धभूमिः । ॥ 8 ॥ असमसमाः पञ्च
स्कन्धाः । ॥ ५ ॥ चत्वारि ज्ञानानि ।
॥ ६ ॥ त्रिकायनामानि ॥ | 1. 27. बोधिसत्त्ववशिताः 1) ॥ |
| 1. 4. दश तथागतबलानि ॥ | 1. 28. बोधिसत्त्वानां चत्वारि वैशारद्यानि ॥ |
| 1. 5. चत्वारि तथागतस्य वैशारद्यानि ॥ | 1. 29. अष्टादशवेणिकबोधिसत्त्वधर्माः ॥ |
| 1. 6. अष्टादशवेणिका बुद्धधर्माः ॥ | 1. 30. बोधिसत्त्वानां सूत्रात्तनिर्गतानि 2) का-
निचिद्रूपनामानि 3) ॥ |
| 1. 7. द्वात्रिंशत्तथागतस्य महाकरूपाः ॥ | 1. 31. दश भूमिनामानि ॥ |
| 1. 8. त्रीण्यवेणिकानि स्मृत्युपस्थानना-
मानि ॥ | 1. 32. अघिमुक्तिचर्याभूमिनामानि ॥ |
| 1. 9. चत्वार्यारत्ताणि ॥ | 1. 33. दश धर्मचर्याः ॥ |
| 1. 10. चत्वारि 1) प्रतिसंविदश्च 2) । | 1. 34. दश पारमिताः ॥ |
| 1. 11. षडभिज्ञानामानि ॥ | 1. 35. चत्वारि संग्रहवस्तूनि ॥ |
| 1. 12. अभिज्ञाकर्माणि ॥ | 1. 36. त्रीणि शिन्ताणि ॥ |
| 1. 13. त्रीणि प्रातिकार्याणि ॥ | 1. 37. अष्टादश शून्यताः ॥ |
| 1. 14. द्वात्रिंशन्नकापुरुषलक्षणानि ॥ | 1. 38. चत्वारि स्मृत्युपस्थानानि ॥ |
| 1. 15. अशीत्यनुव्यञ्जनानि ॥ | 1. 39. चत्वारि प्रकाणानि ॥ |
| 1. 16. सूत्रात्त उद्धृतानि तथागतमाहात्म्य-
नामानि ॥ | 1. 40. चत्वारः 4) ऋद्धिपादाः ॥ |
| 1. 17. पञ्चङ्गस्वरनामानि ॥ | 1. 41. पञ्चेन्द्रियाणि ॥ |
| 1. 18. प्रज्ञापारमिताद्विज्ञा 1) समधि(सं)
नामानि ॥ | 1. 42. पञ्च बलानि ॥ |
| 1. 19. बोधिसत्त्वानां साधारणनामानि ॥ | 1. 43. सप्त बोध्यङ्गानि ॥ |
| 1. 20. नानाबोधिसत्त्वनामानि ॥ | 1. 44. आर्याष्टाङ्गमार्गनामानि ॥ |
| 1. 21. बोधिसत्त्वसमाधयः ॥ | 1. 45. प्रत्येकबुद्धपुद्गलाः ॥ |
| | 1. 46. आचक्रपुद्गलक्रमाः 5) ॥ |

1) S. °सम्बन्धिश्च

1) Поправка; въ рук.: °शितानि: —
2) Въ рук.: सूत्रात्तनिर्गता — 3) Въ рук.:
काञ्चिद्रूप° — 4) Такъ S. — 5) Въ рук.
°प्रपुद्गलक्रमा, प्रति°?

- । ४७ । नानाआवकनामानि ॥
 । ४८ । आवकगुणाः ॥
 । ४९ । द्वादश धूतगुणाः ॥
 । ५० । आवकभूमयः ॥
 । ५१ । षडनुस्मृतयः ॥
 । ५२ । अशुभभावनाः ॥
 । ५३ । घनापानभावनाविधिः ॥
 । ५४ । षोडशभिराकारैर्विसरितानि चत्वार्यर्पसत्यानि ॥
 । ५५ । निर्वेधभगक्रम ॥
 । ५६ । षोडश चित्ततणाः ॥
 । ५७ । दश ज्ञानानि ॥
 । ५८ । चत्वारः प्रतिपदः ॥
 । ५९ । यानक्रमः ॥
 । ६० । इन्द्रियवैमात्रता ^{१)} ॥
 । ६१ । पञ्च गोत्राः ॥
 । ६२ । द्वादशाङ्गधर्मप्रवचनं ॥
 । ६३ । धर्मपर्यायाः ॥
 । ६४ । ॥ ६५ ॥ *
 । ६६ । कण्ठोक्तकारिकादीनां नामानि ॥
 । ६७ । चत्वारि ध्यानानि ॥
 । ६८ । समापत्तिनामानि ॥
 । ६९ । चत्वार्यप्रमाणानि ^{२)} ॥
 । ७० । अष्टौ विमोक्षाः ॥
 । ७१ । अष्टावभिन्वायतनानि ॥
 । ७२ । दश कृत्स्नायतनानि ॥

1) U. इन्द्रियावानाभिसमयगोत्र, S.
 нѣтъ — 2) D. U. °र्थाप्रमणानि

* Скр. заглавія нѣтъ.

- । ७३ । त्रीणि विमोक्तमुखानि ॥
 । ७४ । चत्वारि प्रतिशरणानि ॥
 । ७५ । त्रिविधा प्रज्ञा ॥
 । ७६ । पञ्च विद्यास्थानानि ॥
 । ७७ । चत्वारि धर्मसमादानानि ॥
 । ७८ । सप्त धनानि ॥
 । ७९ । षडनुत्तर्यानि ॥
 । ८० । चत्वार्यधिष्ठानानि ॥
 । ८१ । नव प्रमोद्यपूर्वका धर्माः ॥
 । ८२ । षड् निःसर्णीयधातवः ॥
 । ८३ । चत्वारि देवमनुष्याणां चक्राणि ^{१)} ॥
 । ८४ । तापसंवारमर्यादाः ^{२)} ॥
 । ८५ । योगाङ्गानि ॥
 । ८६ । चत्वारि व्याकरणानि ॥
 । ८७ । त्रीणि लक्षणानि ॥
 । ८८ । चत्वारो ऽभिप्रायाः ॥
 । ८९ । चत्वारो ऽभिसंघयः ॥
 । ९० । शमथविषयनानि ॥
 । ९१ । दशाकुशलानि ॥
 । ९२ । दश कुशलानि ॥
 । ९३ । पुण्यक्रियावस्तूनि ॥
 । ९४ । परमार्थपर्यायाः ॥
 । ९५ । निर्वाणपर्यायाः ॥
 । ९६ । शरणपर्यायाः ॥
 । ९७ । माननापर्यायाः ॥
 । ९८ । उत्सुटिपर्यायाः (?) ॥
 । ९९ । अभयपर्यायाः ॥

1) D. U. चक्राणी — 2) D. U. संवा-
 रामर्याप

- । १००। पञ्चोपादानस्कन्धाः ॥
 । १०१। चत्वारि महामूर्तानि ॥
 ॥ १०२—१०५ ॥ *
 । १०६। द्वादशायतनानि ॥
 । १०७। अष्टादश धातवः ^{१)} ॥
 । १०८। द्वाविंशतीन्द्रियाणि ॥
 । १०९। स्कन्धधात्वायतनेन्द्रियात्मगतानि ^{२)}
 पदान्तराणि ॥
 । ११०। *
 । १११। त्रयङ्मुखता ॥
 । ११२। पुनरष्टौ दुःखताः ॥
 । ११३। द्वादशाङ्गा प्रतीत्यसमुत्पादा ॥
 । ११४। षड् क्तवः ॥
 । ११५। चत्वारः प्रत्ययाः ॥
 । ११६। पञ्च फलानि ^{३)} ॥
 । ११७। चत्वारो योनयः ॥
 । ११८। चत्वार आकाराः ॥
 । ११९। नव सत्त्वावासाः ^{४)} ॥
 । १२०। यष्टावक्षणाः ॥
 । १२१। त्रिकर्मकाराणि ॥
 । १२२। पञ्चानन्तर्याणि ॥
 । १२३। पञ्चानन्तर्यसङ्गतानि ^{५)} ॥
 । १२४। पञ्च कषायाः ॥
 । १२५। अष्टौ लोकधर्माः ॥

* Скр. заглавія нѣтъ.

1) D. U. धातुरनि — 2) D. U. °न्द्रिये
 अन्तर्गतानि — 3) D. U. S. फलं — 4) D. U.
 सत्त्वावसत्त्वावासा — 5) D. U. S. °सतागानि

- । १२६। नानागुणनामानि ॥ ॥ १२७ ॥ *
 । १२८। अनुत्तरपर्यायाः ॥
 । १२९। परिशुद्धपर्यायाः ॥
 । १३०। निमृत्तापर्यायाः ॥
 । १३१। कीर्त्तिप्रशंसापर्यायाः ॥
 । १३२। निन्दनापर्यायाः ॥
 । १३३। अनुकूलाप्रतिकूलादयः ॥
 । १३४। बृहत्परिस्तादयः ।
 । १३५। मित्रकार्यं ॥
 । १३६। अमित्रकर्म ^{१)} ॥
 । १३७। कुशलवर्तः ॥
 । १३८। धर्मदेशनाश्रावणादिनामानि ॥
 । १३९। मायादयः ॥
 । १४०। त्यागादयः ॥ ॥ १४१—१४२ ॥ *
 । १४३। पण्डितपर्यायनामानि ॥ ॥ १४४ ॥ *
 । १४५। नन्दिपर्यायाः ॥
 । १४६। क्रोधकाराः ॥
 । १४७। चत्वारः पुद्गलाः ^{२)} ॥
 । १४८। इक्षुपरत्राकराणि ॥
 । १४९। विवेकादयः ॥
 । १५०। स्थाननामानि ॥
 । १५१। भूमिकाम्पिकारः ॥
 । १५२। प्रभापर्यायाः ^{३)} ॥
 । १५३। लोकधातवः ॥
 । १५४। चत्वारो ^{४)} द्वोपाः ॥ ॥ १५५—१६२ ॥ *

* Безъ скр. заглавія.

1) D. U. °र्मः — 2) D. U. S. °लानि —
 3) D. U. प्रता° — 4) D. U. चतुर

- । १६३। लौकिकदेवताः ^{१)} ॥
 । १६४। नव ग्रहाः ^{२)} ॥
 । १६५। अष्टाविंशति नक्षत्राणि ॥ ॥ १६६ ॥ *
 । १६७। नागराजनामानि ॥ ॥ १६८ ॥ *
 । १६९। यक्षाः ॥
 । १७०। गन्धर्वा यथा ॥
 । १७१। असुरा यथा ॥
 । १७२। गरुडेन्द्रनामानि ॥
 । १७३। किन्नरा यथा ॥
 । १७४। महोरगनामानि ^{३)} ॥ ॥ १७५ ॥ *
 । १७६। महर्षयः ^{४)} ॥
 । १७७। पूर्व उपाध्यायाः ॥
 । १७८। तीर्थिकाः ॥
 । १७९। षट् शास्त्रः ॥
 । १८०। चक्रवर्तीराजानः ॥
 । १८१। चक्रवर्तिनां सप्त रत्नानि गुणक्रमः ॥
 । १८२। सातिरेकपुत्रसाहस्राणां गुण पद्ध-
 ति ॥
 । १८३। चतुरङ्गबलकायः ॥
 । १८४। प्रदेशराजनामानि ॥ ॥ १८५ ॥ *
 । १८६। मनुष्यक्रमः ॥
 । १८७। चत्वारो वर्णाः ॥ ॥ १८८ ॥ *
 । १८९। शरीराङ्गप्रत्यङ्गानि ॥ ॥ १९०—
 १९३ ॥ *
 । १९४। गिरिनामानि ॥ ॥ १९५—१९६ ॥ *

1) D. U. °तानि — 2) D. U. °हानि,
 S. °हानि — 3) D. U. °रगाति — 4) D. U.
 महर्षयानि

* Безъ скр. заглавія.

- । १९७। मल्लनायवनिर्गतनिपराणि ॥
 । १९८। उत्पातनिमित्तानि ^{१)} ॥
 । १९९। प्रमाणतार्कनिर्गतायाः (?) ॥
 ॥ २००—२०५ ॥ *
 । २०६। चतुर्दशाव्याकृतमूलानि ॥
 । २०७। तीर्थकात्मपर्यायाः ^{२)} ॥
 । २०८। विंशतिशिखरसमुद्रतः सत्कायदृष्टि-
 शैलः ॥ ॥ २०९ ॥ *
 । २१०। सप्त विभक्तयः ^{३)} ॥
 । २११। दुर्गतयः ॥ ॥ २१२—२१५ ॥ *
 । २१६। अष्टादश विद्यास्थानानि ॥
 ॥ २१७—२२० ॥ *
 । २२१। ब्राह्मणविहङ्गकर्मः (sic) ॥
 ॥ २२२—२२३ ॥ *
 । २२४। स्वर्गकामादीनां नामानि ॥
 ॥ २२५—२३० ॥ *
 । २३१। घोषधिनामानि ॥
 । २३२। वस्त्रनामानि ॥
 । २३३। परिष्कारनामानि ॥
 । २३४। रङ्गनामानि ॥
 । २३५। मणिरत्ननामानि ॥
 । २३६। शङ्खादिनामानि ॥
 । २३७। सर्वालंकारनामानि ॥ ॥ २३८ ॥ *
 । २३९। पूजापरिष्काराः ॥
 । २४०। पुष्पनामानि ॥

1) D. U. उद् पदनिमित्तानि, S. उत्पाद
 2) D. U. तीर्थका° — 3) D. U. विभिकाय—

* Безъ скр. заглавія.

। २४१। पुष्पमूलति (sic)¹⁾ नामानि ॥

। २४२। पुष्पगुणनामानि ॥

। २४३। सर्वघूपनामानि ॥ ॥ २४४-२४५ ॥ *

। २४६। अर्थमहाविजलत्रयघवतनसकसूत्र-
तत्त्वित्तगणना (।) नामानि²⁾ ॥

॥ २४७-२५५ ॥ *

1) Читай पुष्पमूलादि° — 2) S. °वि-
प्रज्ञघवतन्सक°

* Безъ скр. заглавія.

। २५६। दिग्विदिग्मानानि¹⁾ ॥

॥ २५७-२६६ ॥ *

। २६७। त्रिशरणगमने ॥ ॥ २६८ ॥ *

। २६९। चत्वारः अमणकारका धर्माः ॥

॥ २७०-२८३ ॥ *

। २८४। व्याधिनामानि ॥

1) D. U. दिग्विधिगना°, S. डिग्वि-
डिमा°

* Безъ скр. заглавія.

Всѣ рукописи сообщаютъ одинъ и тотъ же текстъ, но съ массою описокъ; часть ихъ помѣщена въ подстрочныхъ примѣчаніяхъ; болѣе значительный выборъ такого рода варіантовъ будетъ представленъ при переводѣ*), въ мѣстахъ, очевидно, дошедшихъ до насъ въ сильно искаженномъ видѣ, или же допускающихъ исправленія и возстановленія текста приблизительно первоначальнаго.

*) И. П. Минаевъ не успѣлъ довести до конца этого перевода. И. М.

Предисловіе ко II изданію.

Въ 1905 году академикъ С. Ѳ. Ольденбургъ предложилъ намъ приготовить къ печати новое изданіе какъ текста Mahāvūtpatti¹⁾, такъ и указателя къ ней, составленнаго покойнымъ И. П. Минаевымъ. Мы охотно взяли за эту работу, но, къ сожалѣнію, различныя обстоятельства задерживали ходъ ея, такъ что лишь теперь она видитъ свѣтъ. Самое важное было уже сдѣлано Иваномъ Павловичемъ: въ его экземплярѣ оказалось множество помѣтокъ и поправокъ, которыя вездѣ и приняты нами во вниманіе. Сравнительно немного измѣненій противъ первоначальнаго текста дали рукописи L и S, неиспользованныя покойнымъ издателемъ, зато увеличилось число разночтеній въ подстрочныхъ примѣчаніяхъ.

Мы поставили своей задачей не дать новое изданіе этого труднаго текста, а лишь *переиздать* его, особенно вслѣдствіе того, что 1-е изданіе стало библіографической рѣдкостью. Мы позволяли себѣ вносить измѣненія въ текстъ только въ 2 случаяхъ: 1) когда эти измѣненія были намѣчены покойнымъ издателемъ и 2) когда это были исправленія явныхъ опечатокъ или описокъ. Съ перваго взгляда видно, что въ текстѣ Mahāvūtpatti множество испорченныхъ чтеній, грубыхъ грамматическихъ ошибокъ, которыя не трудно было бы исправить, но мы полагаемъ, что критическое изданіе должно дать лишь текстъ (при-

1) Первое изданіе составляетъ II вып. I тома труда И. П. Минаева «Буддизмъ. Исслѣдованія и матеріалы» въ Запискахъ И.-Ф. Фак. Имп. СПб. Университета С.-ПБургъ. 1887.